Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

2.2

जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् के
अनियतकालीन पत्र

# हुंकार

अंक - २७ अप्रैल - १९९३

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रकाशक :

# जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद्

द्वारा—एल ४/५, रोड न० १७
टेल्को कॉलोनी, जमशेदपुर-४

प्रधान सम्पादक :
डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

सम्पादक :
गंगा प्रसाद 'अरूण'

प्रबंध सम्पादक :
मनोकामना 'अजय'

मुद्रक :
रईस प्रिंटर्स एण्ड बाइंण्डर्स
२, गोलमुरी बाजार
जमशेदपुर-३

सहयोग राशि— तीन रोपेया

## एह अंक में

कथा - कहानी :
ब्रज मोहन राय 'देहाती' — ५
मनोकामना 'अजय' — ७
अजय कुमार ओझा — १२
अरविन्द 'विद्रोही' — २२
जय बहादुर सिंह — २३

कविता - गीत - गजल :
तैयब हुसैन 'पीड़ित' — १
जगन्नाथ — ४
अविनाश चन्द्र 'विद्यार्थी' — ८
अनंत मिश्र 'बच्चा' — ९
सत्येन्द्र नाथ पाण्डेय 'निश्छल' - १०
सुरेश मिश्र 'सुरेश' — ११
अनिरूद्ध त्रिपाठी 'अशेष' — १८
अविनाश चन्द्र 'विद्यार्थी' — १९
हरिहर राय चौहान — १९
विद्यापति पाण्डेय — २०
दिनेश चन्द्र पाण्डेय — २०
मृगेन्द्र प्रताप सिंह 'श्रमिक' — २१
गंगा प्रसाद अरूण — २४

संस्मरण—एकांकी :
फणीन्द्र नाथ मिश्र — २
डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' — १५

पत्रिका के प्राचार-प्रसार अपना क्षेत्र में सीमित बा आ ई कवनो जरुरी नइखे कि एह में व्यक्त विचारन से सम्पादक भा प्रकाशक के सहमति हो ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

# सम्पादकी

एगो लमहर अंतराल के बाद "लुकार" अपने सभे के हाथ में थमावत सुदामा अइसन संकोच के अनुभव हो रहल बा। पिछला घोषणा के मोताबिक त लुकार के ई अंक "शैदा-स्मृति अंक" होइत बाकिर कुछ आपन लाचारी आ कुछ सम्मेलन के अधिवेशन के अवसर पर पत्रिका निकाल लेवे के जल्दीबाजी में आदमी सकल ना। तबो "शैदाजी" पर कुछ रचनन के पत्रिका में स्थान देके ओह दिवंगत दिलदार सरस-कवि के प्रति भाव-तर्पण कइल बा। माँफ कइल जाई।

आज भोजपुरी के मान्यता के सवाल हमनी के जीवन - मरन के सवाल बा। कहल गइल बा कि अपना भाषा के उन्नतिये सब उन्नति के आधार ह। फिर भोजपुरी के मान्यता के सवाल के दबा के भोजपुरिहा लोगन के गरदने नू दबावल जाता। भोजपुरी क्षेत्र के निर्वाचित जननेता लोग बुझाता जइसे जनखा होखे, गूँग होखे आ सरकार त बहिर बड़ले बिया। गूँगा के मतलब बा खाली गूर खइला से आ बहिरा के बात त सकल पंच सुने बाकिर सकल पंच के बात ?

ना, अब अइसे काम ना चली। बहिरा के सुनावे खातिर तनिका टनक सुर में बोलहीं के परी। ई अब साबित हो गइल बा कि सरकार खाली आन्दोलने के भाषा बूझेले। एह से अब ओही भाषा में सरकार से भोजपुरी के मान्यता खातिर बतिआवे के परी आ "लुकार" अपना भर समरथ एह दिशा में आपन जोति जरवले रही।

# एक टिकट में दू खेल

—तैयब हुसैन 'पीड़ित'

भाई अरूण,
अँकवार !
होली के भेंट भेंटल
आभार।
खूब लुकारी
भंजले बाड़े रे मरदवा !
'सम्पादकीय' से 'होली में'
तकले दमदार,
शेष तनी अवगार।
फगुआ के भांग का छनलऽ !
बुझला निगाह डबलिया गइल।
एके साथे नया - पुरान
लेखक - कवि
बायन में उपनाम
आ लोक - गीतन के छबि
होली के उतार
आ शैदा जी असवार
यानी,
एक टिकट में दू खेलः
'लुकार।'

('लुकार' के २६वाँ अंक पर आइल एगो प्रतिक्रिया)



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

# विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' : एगो संस्मरण

—फणीन्द्र नाथ मिश्र

बात १९४८ के ह। हम हाई स्कूल के छात्र रहीं। एगो कविता 'आज' (बनारस) का अंक में भोजपुरी में छपल देखलीं। कवि विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' डुमरांव के लिखल रहे। अपना बाबूजी से पूछलीं। बाबूजी डुमरांव के शैदा जी के जाने लऽ। बाबूजी कहले हँ हो उ त डुमरांव ट्रेनिंग स्कूल में पढ़ावे ले। तूं कइसे उनकर नांव जनलऽ। हम अखबार देखा दीहलीं आ कहलीं देखना कइसन नीमन भोजपुरी में कविता निकलल बा। उ कहले हम कबो डुमरांव चलबि त उनका के देखा देबि। ओह घरी भोजपुरी में बहुत कम लोग लिखत रहे आ लिखलो पर केहू छापे वाला ना रहत रहे। बाबूजी (स्व. शिवपूजन मिश्र) जब तनखाह लेबे जाए लगले त हमरो के लिया गइले। डुमरांव राज का गढ़ का सामने पूरब ओर गली में शैदा जी एगो खाटी पर अपना घर में बइठल रहन। "शैदा बाड़ हो-" बाबूजी आवाज दिहले। आव हो एइजे बानी। शैदा जी कहले। तपाक से मिलले आ एक लोटा पानी आ गुड़ ले अइले। फिर बाबूजी शैदा जी से कहले "इ हमार छँवड़ा तोहरा के देखे के कहत रहल हा एह से लिय-वले अइलीं हां। शैदा जी पीठ पर हाथ ध के पूछले का हो तूं हमार नांव कइसे जनलऽ? हम 'आज' अखबार के कविता "दिन आ गइल भइया चुनाव के" सुना दिहलीं। उ खूब हँसले आरे तें त रट गइल बाड़े, ले एगो मिठाई खो। फिर हमरा बाबूजी से कहले ए के जब अइह त ले ले अइह। बाड़ा तेज बा हो। इ खूब पढ़ी। सांवर रंग, गठल बदन, गर्दन तक बाल, मिरजई आ धोती पहिनले शैदा जी के इयाद करत हम सांझि के घरे अइलीं।

★ ★ ★

दस बरीस बीत गइल। रोजी रोटी के खोज में घर छोड़ि दीहलीं। कुछ कुछ कविता भी लिखे लगलीं एगो कवि-सम्मेलन में शैदा जी से भेंट हो गइल। पता चलल शैदा जी सेवा निवृत हो गइले। कहले तूं हूँ कवि-सम्मे-लन करावऽ। कुछ कवि लोग के पता भी लिखवले। हम तुरंते एगो कवि-सम्मेलन के तैयारी कइ दिहलीं। कई गो कवि लोगन का साथ शैदा जी भी अइले। खूब कविता सुनवले। साठ बरीस का उमिर में भी उनुका कुल कविता जबानी इयाद रहे। एकरा बाद त बिना शैदा जी के कबनो कवि-सम्मेलन होते ना रहे।

★ ★ ★



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बाल-कवि बेकस का गांवे नोखा में एगो कवि-सम्मेलन रहे । सब कवि लोगन के खबर दिया गइल । दूगो कवि लोग का इ नीक ना लागल । उ लोग बरिजे खातिर सब कींहे गइल । सब लोग त मानि गइल बाकिर शैदा जी ना मनले । बहुत बात लोग कहल, त कहलें कि हम सरस्वती के पुजारी हईं । लछमी से बैर रहेला, तूं लोग जा । आ आपन केवाड़ी बन्द क लिहले । कवि-सम्मेलन में अइले त दूनो जाना के चिट्ठी आ बात कहले । एकरा बाद से उ दूनो कवि लोग जब कहीं कवि-सम्मेलन में गइले शैदा जी के ना बोलावे दीहले ।

★ ★ ★

एक बार नोखा कवि-सम्मेलन में से आवत रहीं जा । कहले, बबुआ हमरा के १ बज बस धरा दी ह । हमार औरत कहली की शैदा जी से आजु कविता सुने के बा । हम कहलीं इ त १ बजे जइहें । उ कहली हम अइसन उपाइ करत बानी की ४ बज जाला । हमनी का ६ बजे डेरा पर पहुँचल रहलीं जा १० बजे खीर, पूड़ी, आलूदम डट के भोजन भइल । फिर ऊपर से दही-चीनी अउलाहे मीलल, शैदा जी पंखा का हावा में सुतले त ६ बज गइल रात के जागल आराम से सुत गइले । उठले त कहलीं चले के नु बस धरे । कहले-'हूँ हो, जल्दी पहुंचे के बा । बाहर निकलले त हँसि के कहले अब का जाईं किरिन त डूबे लागल ।' फिर का कहे के बा । रात भर खूब गीत-कवित्त सुनवले ।

★ ★ ★

शैदा जी के पत्नी उनुका से २ साल पहिलहीं चल देली । परिवार में एगो लइकी आ एगो दामाद के अलावे नाति-नातिन वाड़े । पत्नी के मरला का बाद शैदा जी कुछ अकेलापन महसूस करत रहले । मिलले त कहले— "बबुआ अब बुझाता पत्नी का होले ।" आँख में लोर आ गला भरि अइला से आगे कुछ ना कहले ।

★ ★ ★

शैदा जी कई गो किताब लिखले । कुछ हिन्दी में कुछ भोजपुरी में । अर्थाभाव से सब छपा ना सकले । डुमरांव राजा (महाराज कुमार कमल सिंह) उनुका के बराबर बोला के कविता सुनत रहन । आवाज में दम बराबर रहल अन्त तक ।



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कर्मवीर का अपना काम के मेहनताना ना चाहीं। शैदा जी सरस्वती के उपासक रहन। केहू से उनुका ओरहन ना रहे। अन्त तक लिखले बाकिर उपेक्षा के शिकार रहन। अकादमी आ आकाशवाणी भी उनुकर उपेक्षे कइलसि। उनुका एकर कवनो मलाल ना रहे। भोजपुरी माई के ई सिपाही अन्त तक सेवा करत-करत एकरा गोद में डुमरांव के ओही घर में हरदम खातिर आंखि बन्द कइ लिहलसि, जवना में बचपन से रहत रहे। शैदा अब नइखन बाकिर डुमरांव के बच्चा-बच्चा का जबान पर उनुकर गीत-कवित्त आजुओ बा।

●

—कलक्टरी क्वार्टर्स फजलगंज
पो०— सासाराम-८२१११५
जिला— रोहतास
बिहार

---

## गजल

—जगन्नाथ

दर्द के बुझनिहार के होई
हमरा खातिर मयार के होई
रउवा अस सुननिहार जब बाटे
हमरा अस गवनिहार के होई
सभे दरियाव बन के बइठल बा
रउवे बोलीं किनार के होई
डेंसे हजार खूबसूरत बा
जिन्दगी से फरार के होई
छोट मुंहे गजल सुना दिहलीं
हमरा अस गुनहगार के होई

●

—रोड २, क्वार्टर ७, गर्दनीबाग, पटना



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

# बाजा ना बाजित

—ब्रजमोहन राय 'देहाती'

"घर, छाई-छोपि के देखल जाला ना चले त उजारियों के" कहते बाबूजी कचहरी में डेग डललीं। हमनी तीनो भाई कचहरी के कठघरा में बाबूजी के बनत-बिगड़त चेहरा पर तिकवत उन्हुका मन के थाहत चुप-चाप खाढ़ रहलीं। मात्र डेढ़ बिगहा खेत के हिस्सदारी पूरे परिवार के कचहरी में खाढ़ क देलसि एकरा पहिले बहुते बार गाँव - घर के कथित मानीन लोगन के पंचाइत भइल रहे। पंचाइत में जे आइल, अझुरा - अझुरा के गइल। पंच परमेश्वर होले, ई कहियो के बात होखी। आज के पंच "अझुरा लागल रहले पंचन के बाजार बनल रहीं। लोग आवत-जात रही। तबे भाव चलत रही। फेर, दाल आ देआद गलवले के मोल ह। घर फूटे गवांर लूटे। लुटले के मोल ह। ना त ई बढ़ि के हमनी का बराबरा हो जइहे सन। बाप-बेटा, भाई-भाई के झगरा जतुने अझुराइल रहो।"

एने, दादा-परदादा सम्पत्ति पर हमनियों के नांव चढ़ि जाए के चाहीं। हमनी दू भाई नोकरिहा। एक भाई खेती संभरले। बाबूजी का सरकार से पुलिस पिनसिन मिलते बा, तबो घर पर फूस छाड़ि खपड़ा ना चढ़ल। हरियर कड़ी में मंगरा लागि गइल। घर के खरचा सुरूसा के मुँह बनि गइल बा।

"घर वाला का रटनी लागल—"नोकरी करे वाला कमाई के थाहे नइखे लागे देत। सभ थकिअवले जाता। अपने रूपया के गलईंचा पर सुतिहें, घरे का होता कबनो फिकिर नइखे।"

अपना के संभालत हमनी दूनो नोकरिहा कहलीं— "घरे खेत-बधार के सभ पैदा खाते बाड़े तबो रुपया मांगत आहस नइखे लागत ? बाल-बच्चा खिलावे-पढ़ावे में तबाह जवन बांचल घरहीं जाता तबो नाक-मुँह चढ़ले रहता। जब ना तब खेत बेचे के धमकी देत रहताड़े। खेत पर नाम चढ़ि गइला का बाद बेचले भु ला जाई।

गाँव-घर से अँटकर मिलल -"बुढ़ऊ के माया बँटा गइल बा। ई असो खेत खरका के बड़का बेटा के दीहें। खरचा के नाम पर करजा बढ़ल चलि जाता।" कनफुसकी विश्वास में बदले लागल, जब बाबूजी दस कट्ठा बन्हकी ध दिहलीं।



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

फेरू का - पहिले पंचाइत। पंचाइत के मुँह देखली। बाकिर कवनो फायदा ना भइल। हमनी के 'माई' हमरा लरिकांइए में सरगवासी हो गइल रहली। बिना माथ के दँवरी। बिना नाधा के हर। नदी के दूनो पाट मिलावे वाला पुल टूटि गइल से आपन डफली आपन राग। रागो तुक मिजाज, जल्दी धनी बन जाईं के हबस खाटी दूध में खटाई डाले लागल। नौकरी करे वाला घरे मति आओ। आइबो करो त जल्दी चलि जाव। ना त चाउर ओरा गइले भादो में बेंचाई का? खाली एके जीद - खेत के मालिक हम। दूसर केहू ना। बाबूजी के बाद भईया, भईया का रहते उन्हुकर लइका मारे खातिर तइयार। खून के मोखालिफ खून बनि के खून करे पर उतारू।

केहू समुझावे वाला ना। समुझावल मानेवाला ना। ममिला बिगड़ल, आ बिगड़ते - बिगड़त थाना पुलिस के बाद कचहरी। जमीन के अवकाद से ज्यादा वकील-मोख्तार पर। हित - नाता के हँसल ताख पर। खाली एके धुन-फैसला कचहरो में होई।

ओही कचहरी में खाढ़ होते बाबूजी के नजर हमनी दूनो भाइने पर पड़ल। उहाँ का फफकि गइलीं। पता ना कहाँ से गंगा जमुना उमड़ि गइली। तले सूरूज डूबि गइल रहले। एकदमें अन्हार हो गइल। अमावसी अन्हरिया में टोवतबाबूजी-- "हमार लरिका हम के ना समझले सन आ हमहूँ.....। बेरादरी के लोग हमार गतरे - गतर नोचि लेल। आज "ऊ" रहिती त ई बाजा ना बाजित।

भोजपुरी, हिन्दी, अंग्रेजी आ मगही में लिखल
पुस्तक, पत्र-पत्रिकन के
सुन्दर, शुद्ध, सस्ता छपाई खातिर इयाद राखीं --
रईस प्रिन्टर्स एण्ड बाईन्डर्स
(गोलमुरी मिष्ठान्न भंडार के पीछे, गली में)
२, गोलमुरी बाजार, जमशेदपुर ३



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लघुकथा

# आपन हारल

—मनोकामना 'अजय'

"रामनाथ भइया परनाम"— शंभुनाथ कहलें ।

"खुश रह बबुआ"— रामनाथ बोललें— "कह, का हाल चाल बा ?"

—"हमार हाल चाल त ठीके बा, रावाँ आपन सुनाईं । बाल-बच्चा सब मजे में बाड़न जा नू ? का करत बाड़े जा ?"

—"बड़का दिल्ली में डाक्टर बा । दोसरका मद्रास में इंजीनियर बा । तीसरका कलकत्ता में वकालत कर रहल बा, आ सबसे छोटका एही साल एम० ए० पास क के बी० एन० कालेज, पटना में प्रोफेसरी खातिर दरखास देले बा । भगवान चहिहें त ओकरो नोकरी लागले - लागल बा ।"

★ ★ ★

"रामनाथ भइया परनाम"— शंभुनाथ कहलें ।

"खुशीं रह बबुआ, का हाल चाल बा"— रामनाथ पूछलें ।

—"हमार त ठीके बा भइया, बाकिर राउर ई हाल कइसे हो गइल ? बेराम रहलीं का ? शरीर सूख के एकदम काँट हो गइल बा ! जेकर चार-चार गो बेटा कमनिहार बा, पतोह करनिहार बाड़ी स, ऊ आदमी अपने हाथे चूल्हा फूँक रहल बा — बड़ा अचरज के बात बा !"

—शंभुनाथ कहलें ।

—"का कहीं ए बबुआ, सब किस्मत के दोस बा । हम सोचत रहीं कि हमरा लेखा भागवान एह दुनिया में के बा ? जेकर चार-चार गो बेटा— कवनो डाक्टर, कवनो इंजीनियार, कवनो वकील आ कवनो प्रोफेसर ! बाकिर मन के साध सब मने में रह गइल । हुलसत हियरा पर बज्जर गिर गइल । सब बेटा लोग के इहाँ रह क देख लेलीं । बेटा लोग के अपना कामे से फुर्सत नइखें आ पतोह लोगिन के मेकअप, क्लब, आ हित-नात के इहाँ आवे-जाय से । बेटा लोगन के इहाँ हमार हाल एगो ओकरा से बदतर हो गइल रहे । एही से थाक-हार के, मन मार के अपना जनमभूईं लवट अइलीं । ठीके कहल गइल बा— "आपन हारल आ मेहरी के मारल लोग केहू से ना कहे....।"

●



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

# शैदा जी !

—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

सरधा से लिहल जाई
राउर नाँव 'शैदा' जी !
रहलीं हाँ बहुते मनगर
कहलीं हाँ बात पसनगर
पुरूखा अस पूजल जाई
राउर पाँव 'शैदा' जी !
मनलीं बड़ अपना घर के
गनलीं ना कोर-कसर के
राखल गुमान रउरा पर
मँउसे गाँव 'शैदा' जी
लिहलीं फँदा संगत के
बनि शैदा हर रंगत के
चीन्हल कइलीं हाँ नीके
ठाँव-कुठाँव शैदा जी !
गइलीं हाँ आगे बढ़ते
जस का चोटी पर चढ़ते
चललीं हाँ ना केहू से
कतहूँ बाँव शैदा जी !
कइलीं मजगर मसखरिया
रखलीं बड़ साफ नजरिया
'मोगलसराय' से लउकवलीं
'डुमराँव' शैदा जी !
कइ देलस काल बेकैदा
ले भागल 'कुंजन'-'शैदा'
लागे उझंख अस
भोजपुरी लखराँव शैदा जी !

●



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गजल —

# सपना के बात

—अनन्त मिश्र 'बच्चा'

दू पहर रात में छत प आके तोहर,
सिर से अँचरा हटावल कहर ढा गइल ।
चान सकुचा गइल चाननी कम गइल,
आँख से शर चलावल कहर ढा गइल ॥

देखते लड़ गइल आँख से आँख जब,
उठ गइल मन में हलचल इ का हो गइल ।
गोल मुखड़ा गुलाबी लिहल गाल पर,
दाग तिल के बनावल कहर ढा गइल ॥

केश घुंघराला काला, सावन के घटा,
आँख काजर के रेखा लोभावन सजल ।
भाल में लाल बिन्दी मनोहर लगल,
मन्द मुसुकी सजावल कहर ढा गइल ॥

तन प भूषण - वसन के बा अजबे झलक,
अंग के लेत अंगड़ाई मन में बसल ।
लाल ओठन के थिरकन कहे बात कुछ,
हँस के बिजुरी गिरावल कहर ढा गइल ॥

नख से शिख तक सजवल आ गठल अंग के,
देख के मन जुड़ाइल मगन हो गइल ।
रूप निरखत में अचके लुकाइल छटा,
ई सपन से जगावल कहर ढा गइल ॥

—टेल्को, जमशेदपुर-४



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

# वाद आ विवाद

—सत्येन्द्र नाथ पान्डेय 'निश्छल'

वाद आ विवाद दू गो नांव ह कहे खातिर,
मउज अउर मस्तो में सभे का रहे खातिर ।

वादे करावे विवाद चाहे झगरा
वादे का चलते वा झगरा भा रगरा
केहू तइयार नइखे, केहू के सहे खातिर ।

पूंजो भा समाज में 'वाद' लगाके देखीं
'शाद' का जगहा 'नाशाद' लगा के देखीं
एतने बा बहुत एक दूजा के कहे खातिर ।

कहीं - कहीं होला ई अन्न पचावे खातिर
कहीं - कहीं होला ई अन्न बचावे खातिर
कहीं - कहीं होला ई अपनन का रहे खातिर।

कारन कुछुओ चाहीं शूल बढ़ावे खातिर
कारन कुछुओ चाहीं शूली चढ़ावे खातिर
कारन कुछुओ चाहीं दुनिया में रहे खातिर ।

काम जे ना होखे त बइठ के विवाद करीं
'वाद' के लेके आपन महफिल आबाद करीं
एही कुल बातन के आइल बानी कहे खातिर ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

# पइसा के भुखाइल

—सुरेश मिश्र 'सुरेश'

दुनिया में बाटे नाहीं केहू सकुचाइल ।
सभ केहू पइसा के बहुते भुखाइल ।

बड़का ले छोटका आ धनिक-गरीब ले,
देखि तनी कबो आईं सभका करीब ले,
केहू नाहीं पइसा से बाटे अनसाइल ।

मेला आ बजरिया में, कोट-कचहरिया में,
घरवा में देखीं चाहे गउवाँ-शहरिया में,
जेकरा लगे ना पइसा, बाटे खखुआइल ।

देखी तनी आके एजी, तिलक-दहेज के,
माँगे में ना सोचे केहू, लेबे त सहेज के,
ना जाने कहिया के रहेलन खखाइल ।

दुख - तकलीफ केहू इचिको ना सोचेला,
असहाय देखि सभ केहू खूब नोचेला,
कइसन लोगवा रे, कतना छछाइल !

दरबे से दइबो के मान - मरजाद बा,
कुछे लोग चानी काटे, कुछुए आबाद बा,
संगवा ना जाई कुछो, रहिहें तवांइल ।



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कहानी

# आसिरबाद

—अजय कुमार ओझा

"मुनिया, आरे मुनिया ! भाभी से चुल्हा जोरे के कहु, किरिन डूबे जा रहल बा। जाड़ा के राति में कवनो जरूरी बाकि ११ बजे ले खाइल-पीयल होई। भोरे हमरा जल्दी उठहूँ के बा, काल्हु सनीचर नू ह, बासदेव बाबा के जल चढ़ावे जाए के बा।" माई के बात सुनते मुनिया, भाभी कींहा रसोई में गइल आ तुरन्ते दू कप चाय हाथ में लेले आइल आ माई-बाबूजी के हाथ में धरावत पूछलसि— "महेश भइया कहँवा गइल बाड़े।" बाबूजी जबाब दिहले— "हमहीं भेजनी हा, चउरास्ता सब्जी ले आवे खातिर। अब त आवते होइहें।"

थोरहीं देर बाद, महेश दनदनात दरवाजा ढकेल के घर में घूसले आ सामने बइठल माई-बाबूजी से कहे लगले— "कब दो से बहरी छान्हि प उरूआ बइठल रहल हा, अचानक हमरा टर्च के रोशनी ओकरा आँखि पर चमकल हा, त उड़ल जाता।" ई बात सुनते माई घबड़ा गइलीं आ कहली— "जाए द राति हो गइल बा, मत बोलऽ, एहनी के छान्हि प के बइठल नीमन ना ह।" मने-मन देवी-देवता के गोहरावे लगली।

अँजोरिया राति। करीब १२ बजे के निसबद बेरा। दूध अस चाँदनी से पूरा धरती भीजि रहलि बाड़ी। पूरा वातावरण शान्त आ डेंरवावन लागि रहल बा। जीव-जन्तु, गाँछि-बिरीछ सभ नींद माता के गोदी में सुटुकल बा। दूर कहीं जाड़ से ठीठुरत कुकुर के रोआई सुना रहल बा। कभी-कभी बधार के ओरि से सिआर के हुँआ.... हुँआ के रोआई से कवनो मनई के रोंवा-रोंवा खाढ़ हो जाई।

पता ना कइसे एह भयानक रात में केहू आके दरवाजा खट-खटक-वलसि। खट-खट के आवाज सूनि पूरा परिवार के नींनि एके संगे खुलल आ चाहियो के केहू के गोड़ दरवाजा के ओरि बढ़वे ना करे कि एह रात खा के, अ: का समाचार ले के अइल ? आखिर में महेश आगे बढ़ि के दरवाजा खोलले आ अपरिचित अ दमी के देखि के चिहा गइले। ऊ अ दमी अपने आपन परिचय देत कहलसि— "हम रमेश के साथे में काम करीला। आजु भोरे रमेश, रात डियूटी कके लवटत रहले हा, तले गली के ऊपर से गुजरे वाला एगो बिजली के तार टूटि के उन्हुका देहि प गिर गइल हा आ ओहिजे .....।" अतना सुनते महेश भइया हो ! कहि के चिल्ला उठले आ ओहिजे धड़ाम से गिर गइलन। इनकर दर्दनाक चिख



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुनि के उनुकर बाबूजी माथा पीटे लगलन। माई के त जइसे आधा देहि कटि के फरका हो गइल। सभ हूबे खतम हो गइल। ऊ चिल्ला-चिल्ला के रोअस आ भगवान के सरापस— "आरे दइबा! तोरा इहे दिन देखावे के रहे त हमरा के पहिलहीं काहें ना उठा लिहलीस? भरल जवानी में ते हमरा आँखि के तारा छीन लीहले। हम तोरा के कबो माँफ ना करबि।"

रमेश के बहिन मुनिया पागल अस झोंटा बिखरवले रोअत घर से बहरी चल देलसि। ना तन के सुधि रहे ता बस्तर के। गाँव के लोग धके कइसहूँ ओकरा के घर में ले आइल।

उन्हुकर (रमेश) नया कनिया, जवन की अभी अपना पति के सुख-दुख के मरम ना जनलसि, के दशा का पूछे के बा? ओह बेचारी के का कहल जाऊ? ऊ त दुख से एकदम सनक गइल। छाती पीट-पीट के रोवे लागल। ऊ पागल लेखा मतिभरमवले आपन सँउसे देहि बकोट लेलसि आ पागलपन में अंट-संट बके लागल।

एह लोग के रोवाई सुनि के पास-पड़ोस के लोगो आके ओही राग में आपन राग मिला के रोवे लागल। हाय! बेचारी पतोहि के हाल त त सभसे खराब बा। ऊ बेचारी जमीन प बेहोश पड़ल बिया। बाकिर हमदर्दी देखावेवाला लोग ओकरा के एह हालतो में नइखन छोड़त ताकि ओकरा तनिको आराम मिलि सको। लोग ओकरा के होश में ले आवत बाड़े। फेरू बेचारी एह अपार दुख से चिल्ला के ओही हाल में पहुँच जात बिया। साचो गजब दर्दनाक माहौल बा ओहिजा के।

★ ★ ★

रमेश के बिआह हाले में करीब दू महीना पहिले भइल रहे। खूब सुनर कनिया के साथे-साथ तिलको - दहेज खूबे मेंटाइल रहे। दुआरे बारात लगला प द्वार पूजा के समय सैकड़ो आदिमी के हाथे अछत के रूप में आसिरबाद पाके रमेश के बुझाइल रहे कि शायद हम अमर हो गइल बानी। बिआह के दवरान जगहे-जगह हर विधि प चुमावन, आसिरबादी से सचहूँ उन्हूका बुझात रहे कि हमार वैवाहिक जीवन अमर हो गइल। हमनी का दूनो वेकत कभी एक दूसरा से जुदा ना होखबि जा। पुरान समय में एक आदमी के सराप भा आसिरबाद से का से का हो जात रहे। आजु हमनी के त सैकड़न लोग लाखन बरीस जीये के आसिरबाद दे रहल बा।

बारात लवटला प दुलहा आ दुलहिन के डोली से उतारे खातिर टोला-पड़ोस-महाल्ला के मेहरारू सभ जूटल रही। गीत गवात रहे—



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"हाथ के सिन्होरवा लेले, आमा बाड़ी खाढ़ हो,
खोलऽ बबुआ पालकी के पटरी, मंगिया बहोरबि हो,
कइसे में खोली ए आमा पालकी पटरिया हो,
ससुर के दुलारल धियवा, से हो बाड़ी साथ हो.....।"

डोली से उतरला प दउरा में डेग डालत देवता घर में गइल रहे लोग। ऊहाँ देवता के गोड़ लगा के कनिया के मुँह देखाई होखे लागल। रमेश के माई चाँद लेखा अपना पतोहि के मुँह देखि के सोना के सिकरी देली। टोला-महाल्ला के लोग कनिया आ मिलल समान के देखे आ कहे — "कनिया के बाप-माई बबुआ के अतना समान देले बा कि घर में राखे के जगहे ना मिली। इन्हिकरा घरे लछिमी पइस गइल बाड़ी।"

चउठारी भइल। रात खा जब रमेश घर में गइलन आ चाँद लेखा सुनर अपना कनिया के देखले त उन्हुका अपना भाग्य प विसवासे ना होत रहे।

छुट्टी ना रहला से बिआह बाद तुरन्ते उन्हुका अपना नोकरी प सहर चलि जाये के पड़ल।

★ ★ ★

आजु रमेश के किरिया ह। गाँव भर के औरतन से आंगन भरल बा। ऊ आपुस में बतियावत बाड़ी स— "का जाने पतोहिया के अछते कइसन रहल हा। आवते मरदे के खा गइल। एकरा के नइहर पहुँचा देबे के चाहीं ना त अऊर कवनो खतरा हो जाई।" केहू कहत रहे— "गनना नाहियो बनला प तिलक-दहेज के लालच में बिआह कइल हा लोग, त का होई?" केहू एह घटना के आपन-आपन भाग कहे आ सुझाव दे कि एह लोग के अपना छोटका लइका महेश के साथ एकर बिआह क देबे के चाहीं। ना त कवनो ऊँच - खाल गोड़ परि जाई त बड़ा बदनामी होई। असहीं जेकरा जवन बुझात रह आपन - आपन बिचार कहत रहे।

बिआह के बेरा बाप-मतारी, हीत-नात आ सामुहिक आसिरबादी के का भइल? भर बिआह खाली आसिरबादे के झर-झर बरखा एह लोग प होत रहल। आखिर का भइल ओह आसिरबाद के परिनाम?

●

—२, गोलमुरी बाजार, जमशेदपुर-३


CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नुक्कड़ एकांकी —

# एक लोटा जल

—डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

सुरेश पांड़े—लइका के बाप । सुदामा मिसिर—लइकी के बाप ।

सुरेश पांडे — (हाँक पारत) सुदामा मिसिर बानी जी । [सुदामा मिसिर हड़बड़ाइल] आरे सुनत बाड़ू जी ! तहार घर दुआर एह बेरा ले ठीक ना भइल तले बुचिया के देखे खातिर पांड़ेजी आ गइले ।
[लइकी के मतारी के भीतरी से आवाज] आ घर-दुआर में का भइल बा ?

सुरेश पांड़े — मिसिरजी बानी जी !

सुदामा मिसिर— प्रनाम ! प्रनाम ! आइल जाउ, आइल जाउ ! गरीब के कुटिया पबित्तर कइल जाउ ।

सुरेश पांड़े — आरे कवना खोह में बसल बानी मिसिरजी ! बाप हो बाप । टेसन से एक्का पर आवत बानी । ढकचा से पेट मथा गइल । हइसन भला रोड होला !

सुदामा मिसिर— का कइल जाउ । सरकार सभ रोड टैक्स खा जाता । नेता सभ चमचा बाड़े ।

सुरेश पांड़े — आरे मारी गोली सरकार आ नेता सभ के । ई काम त रउरा सभ के अपने मिलि-जुलि के श्रमदान से पूरा क लेबे के चाहीं । एह रोड़वा प रोजे सरकार चलता कि रउरा सभे । छीः ! छीः !! रोज के तकलीफ सहत बानी आ आपन हाथ गोड़ नइखी चलावत सभे । ए महाराज, आपन हाथ जगन्नाथ । हमरा इलाका के गाँवन के देखि आईं । कइसे लोग मिलि-जुलि के श्रमदान से बड़का-बड़का काम चुटुकी बजावत क लेता । एक के मुअले नू दू के छुवले । गर्मी के दिन बा । कंठ झुराइल बा । एक लोटा ठंढा जल ले आईं मिसिरजी ।

सुदामा मिसिर— जल खावा बनि रहल बा ।

सुरेश पांड़े — ठीक बा, ठीक बा ! बने दीं । तले कंठ तर करे दीं । एक लोटा जल मंगवाईं ।



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुदामा मिसिर— सुनत बाड़ू हो ? कुआं से एक लोटा ठंडा जल दीह ओने से । ( लोटा में जल ले के आवत बाड़े आ पांड़ेजी से ) —लीहल जाउ !

सुरेश पांड़े — (लोटा में निहारि के देखत बाड़े) कहां से जल ले अइली हा जी ।

सुदामा मिसिर— घरे में बड़का इनार बा । बाबा के खोनवावल ह ।

सुरेश पांड़े — इहे पानी पीही ले सभे ! राम ! राम !! हई साफे किटाणु लउकत बाड़े स । माइक्रोग्लास लगवला प ठेकान ना कतना जीवाणु लउकिहें स । अरे रउरा सभे इहे पानी पीहीं ले जी ?

सुदामा मिसिर— हँ, पांड़ेजी हमार तीन चार पुस्त त एही इनार के पानी पीअत आ रहल बा ।

सुरेश पांड़े — राम ! राम !! आरे केहू के कवनो बेरामी - हेरामी नइखे भइल ?

सुदामा मिसिर— बाबा हमार पेचिस कें रोग से मरल रहले । हमरा पत्नी के डायरिया बा । पोता के टाइफायड भइल बा । दोसरका के पोलियो मार देले बा । एक बेर हमरो टाइफायड भइल रहल हा । आरे बेरामी हेरामी, दुख सुख त भाई हवे स पांड़ेजी ।

सुरेश पांड़े — कुआं के जगत कइसन बा ?

सुदामा मिसिर— कुँआ पुरान बा । जगत में कहीं-कहीं चिहार लागल बा । दरार परि गइल बा ।

सुरेश पांड़े — कपड़ा लता कहवां साफ होला ?

सुदामा मिसिर— घरे कुँआ बा त कपड़ा साफ करे आदमी कहाँ जाई ? घरही कुँआ के जगत पर साफ होला पांड़ेजी ।

सुरेश पांड़े — सत्यानाश ! सत्यानाश !! ओकर पानी कुँआ में जात होई । ब्लीचिंग पावडर कबो ना डाली ?

सुदामा मिसिर— ई कइसन पाउडर के नांव बतावत बानी ? हमनी नइखी जा जानत ।

सुरेश पांड़े — कुँआ के उड़ाह ना होखे ।

सुदामा मिसिर— आँगन से पानी निकाले के निकास नइखे । पनरोह बा । उहो भर गइल बा । सँपरला बेगर ऊ झरात नइखे ।



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुरेश पांड़े — ना मिसिरजी ! ना, मांफ करीं रउरा कीहाँ संस्कृति-सभ्यता के नामो निसान नइखे। हम अपना लइका के सादी रउरा कीहाँ ना करबि। बाप हो बाप ! हमार कमासुत लइका रउरा कीहाँ - अपना ससुरारी आई त ईहे नू जल पीही आ रोग के शिकार बनी। हम जानि के अपना लइका से हाथ ना धोवबि। रउरा सभ के आम जानकारी नइखे। जइसे बटलोही के एगो चाउर टोइ के आदमी जानि जाला कि ओकर पूरा भात सिझल बा कि कांच, असहीं राउर एक लोटा जल देखि के हम ताड़ि गइलीं। पता ना राउर लइकी कवना रोग के शिकार होई हम चलत बानीं।

सुदामा मिसिर— (रूआँसी आवाज में) ना पांड़ेजी अइसन मत करीं. हम सभ मांग पूरा करे के तेयार बानी - मोटर साइकिल नगद पचास हजार, १० भर सोना, गला के सिकरी। अउर कुछ मांगल जाउ। हम दसो नोह जोड़ले बानी।

सुरेश पांड़े — ई दान - दहेज लेइये के का करबि। जवना घर में अशिक्षा बा। सभ्यता आ संस्कृति के नामो निशान नइखे। आजुवो १८ वीं शाताब्दी में जीअत बानी सभे। अच्छा राम राम मिसिरजी। (चलत-चलत) राउर एक लोटा जल बता देलस कि रउरा सभ कतना में बानीं। भला एही घर में अपना लइका के शादी करबि जी ! पता ना, लइकी कइसन होई ?

—एम-३२/३,
टेल्को कॉलोनी, जमशेदपुर-४

---

लोकगीत—

## जंतसार

ए राम, हरि मोरा गइले बिदेसवा त दूइ नवरंगिया लवले हो राम।
ए राम, हरि के लावल नवरंगिया, त नवरंग झुरा गइले हो राम॥
ए राम, भइया मोरे अइले हो पहुनवाँ, त नवरंग छाँह ठाढ़ भइले हो राम।
ए राम, बहिना केकर लावल नवरंगिया, त नवरंग झुरा गइले हो राम॥
ए राम, हरिजी के लावल नवरंगिया, त नवरंग झुरा गइले हो राम।
ए बहिना पीस देहु जीरवा सतुइया त हम जइबो बहनोई खोजे हो राम॥
ए राम, पुरुब खोजलीं, खोजलीं पछिमवाँ, अवरू दखिन खोजलीं हो राम।
ए राम, तीनु भुवन खोजि अइलीं, त कतहूँ बहनोइया न मिले हो राम॥
ए राम, घींचि बान्हे बहिन अँचरवा, त बाबा कुलवा रखिहे न ए राम।



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

# गीत

— अनिरुद्ध त्रिपाठी 'अशेष'

के बा लिहले जनमवां जे भरि पाई ।
बिना सूदिया के करजा तुहार माई ॥
नौ महिनवां पेटवा पललू, अपने खूनवां - हंड़वा सेवलू
जवने अंचरा गउरा पुजलू, बबुआ मूते धा के पोछलू
तुहरे दूधवा के कवनेगां बखान गाईं ।
बिना सूदिया के करजा तुहार माई ॥
जनमे से जन्तर पहिराव, अचिको रोवे त झरवाव
बपना केहू के जो पाव, पहिले खाल त खियाव
ना त बबुआ के टोना-भूता लागि जाई ।
बिना सूदिया के करजा तुहार माई ॥
जो बबुआ के जर हो जाला, घूंघट मांगी से हटि जाला
सनकी जइसन मन बउराला, नइहर-सासुर एक हो जाला
जुरते कथ्था-पूजा-धारि-जेवनार मनाई ।
बिना सूदिया के करजा तुहार माई ॥
बबुआ केतनों खइले होवें, माई पेटवा धा के टोवे
अपने केतनो दुख में रहिहें नाहीं बबुआ से कुछ कहिहें
उनकर मुंहवे देखते सगरो दुखवा मेटि जाई ।
बिना सूदिया के करजा तुहार माई ॥
बबुआ खातिर सबसे बाउर, बदके पानी में जस चाउर
कबो पतोहिया से अझुराली, कबो जेठे संघ लड़ि जाली
कबो सजनो से बोली-ठोली हो जाई ।
बिना सूदिया के करजा तुहार माई ॥
अइसन माई जे बिसराई, आपन जिनिगी नरक बनाई
जे मंदिर-महजिद ना जाई, बस माई के माथ नवाई
घर बइठले चारो धमवा के फल पाई ।
बिना सूदिया के करजा तुहार माई ॥

एन - २८/४, टेल्को कॉलोनी
जमशेदपुर



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गजल—

## प्रात बाकी बा.....

—अविनाश चन्द्र 'विद्यार्थी'

कहे पवलीं कहाँ, अबहीं त बहुते बात बाकी बा
पता नइखे सहे खातिर कवन उतपात बाकी बा
करेजा हो गइल झाँवाँ जहाँ काँचे उमिरिया में
करीं का सोच अब केकर सहे के लात बाकी बा
निहारीं रूप का आपन लगा के हम गरे फँसरी
जरल जब फेंड़ के जरिये त कइ दिन पात बाकी बा ?
इहाँ हम ठाढ़ होके सोझ दलकी में धँसत गइलीं
उबारे के कहाँ केहू में अब अवकात बाकी बा ?
जोगवले आ रहल बानीं बेयरिया में दिअरिया के
सुनत बानीं झंकोरन के अनेक जमात बाकी बा
रतवन्हीं छूटि गइलो पर भइल बा आजु चकचवन्हीं
कसक अतने कि बीतलि राति तबहूँ प्रात बाकी बा।

—शिवाजी पथ, यारपुर, पटना-१

## गजल

— हरिहर राय चौहान

सुनले रहीं कि लोग
इहाँ बेजुबान बा।
घर-घर में बाटे कब्र
आ बस्ती मसान बा।
सब हाल अंतड़ियन के
बा पेट कह रहल,
हर आदमी के भीतर
एके उफान बा।
बरिसन के झुग्गियन के
टाटी उजाड़ के
बस्ती के बीच गिनती के
कुछुए मकान बा।

मजबूर ई उसाँसी
आ आह-दरद से,
लागत बा कवनो मनई
आइल जवान बा।
ठठरी प मढ़ल चाम के
चोला ई देख ली',
बेजान जिन्दगी के
अतने अड़ान बा।
मुर्दा के कफन खींच के
बा लोग जी रहल,
इहवाँ के संविधान में
इहे चलान बा।

एन-१२/४
टेल्को कॉलोनी



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

## आमद-आस

—विद्यापति पाण्डेय

देखत-देखत शेष भइल दिन
कब तक आस लगाईं ।
सीमा पार पराइल धीरज
लगे, कहूँ चलि जाईं ।
आस चिरइयां डाढ़े बइठे
ईर्ष्या ढेला मारे
एह डाढ़ी से ओह डाढ़ी पर
फुदुक - फुदुक मन हारे
बाकिर कुछुओ हाथ न लागल
सबकर चेट गोंटाइल ।
ना जाने कबना जतरा से
रहीं आज हम आइल ।
घर के लोग कहेला हमरा
जनम के सीधा - सादा ।
ना जानसु कुछ दाव-पेंच
ई का रखिहन मरजादा ?
खाये के चिकने चाहीं
आ पहिरे के लील बोटी
एह मंहगी में पाव-पाव भर
तन में तेल चभोरी
इनका से कुछ आस लगावल
तन के खून जरावल
पानी में भिजला लकड़ी से
अरहर दाल गलावल ।
हमरो बा अफसोस अतनवें
केनियो के ना भइलीं ।
घर से ताना सांझ - सबेरे
तीनू लोक से गइलीं ।
रिश्वत एक अधेला कबहूँ
मिलल ना हमरा हाथे,
बाकिर मोह ना छूटल हमरा
ई कलंक बा माथे ।
अइसे त जे खूब कमाइल
लूटल दूनो हाथे,
हमरो से आगे दुर्गति में
परल हाथ धइ माथे ।

सहायक, कृषि विभाग
नया सचिवालय, पटना

●

## भावे नाहीं तनिको सिंगार

— दिनेश चन्द्र पाण्डेय

सभके बलमुआं त
घरे चलि अइले हो,
काहे नाहीं अइले हमार।
चिहुँकेला मन मोर
निमनो ना लागे भोर
कटे नाहीं बिरहा के रात,
सून लागे सेजवा
कि कसके करेजवा हो
के से कहीं दिलवा के बात,
वेधेले वेयरिया
अँचरिया उड़ेले सखी
भावे नाहीं तनिको सिंगार ।
गील भइले अँखिया
कि ढील भइले अंगिया हो
कल नाहीं परे दिन-रैन,
कोइली के बोलिया
कि गोलिया चलावे नित
मन परे पियवा के बैन,
पिया - पिया रटन
लगावेला पपीहरा
कि पियर भइले देहिया हमार ।



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

# इहे मन करेला

—मृगेन्द्र प्रताप सिंह 'श्रमिक'

इहे मन करेला
दुखियन के दुनिया में जाके
हम आपन गीत सुनाईं
आ
लोर से सलोर
दरद भरल भाषा में
छन्द से सजा के
सुर अउर ताल से
गीत लिख - लिख
कंठ - सुर से गाईं
आ
टूटल झोपड़ियन में जाके
लाख - लाख सियाह जिनिगियन में
आस के किरिन बोलाईं
हारल - थाकल
बिखरल टूटल जवानी के
मुरझाइल मन में
गा - गा के नया - नया गीत
फेरू सुतल जोस जगाईं
गीत से सक्ति मिलेला
गीत से आसक्ति मिलेला
गीत से भक्ति मिलेला
गीत से बतावल जाला
गीत से जगावल जाला
मन करेला कि अपना गीत से
जन - जन के जगाईं ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

# भकोल के बम

—अरविंद 'विद्रोही'

ख.....ड.....ख.....।

"के ह" ? कहत जगु अग्रवाल बरामदा में अइले। आरे तें त थूक-थाक के बरमदा खराब क देले। देख के घीन लागता। हट जल्दी इहां से।" भकोल उठ के देह सइहारत रहले तबले अग्रवाल के नोकर आ के घेंटुआ दिहले सन। ठेंहुना छीला गइल। आगे के दाँत भहरा गइल आ मुंह से ललका पानी निकल गइल। अग्रवाल अइसन आँख उलटि दिहलन कि बुझाव ऊ भकोल के चिन्हते ना होइस।

"जगु!"

हम ही भकोल हईं आ जगुआ से जगु अग्रवाल हमरे बनावल हवे ऊ दिन भोर पड़ गइल।" "ते कवना मुंह से हमरा दुआरी अइले ह।" अग्रवाल! तहरा लूट खसोट कइला के इनाम कुर्सी मिलल समाज में प्रतिष्ठा बढ़ल। तहरा कहला पर हम खून कइलीं। हमरा जिनगो भर के जेल मिलल। तू अइसन आँख उलटि दिहले जइसे चिन्हते ना होख। हम तोरा कहला पर अइसन महापुरूष के खून कइलीं जे हमरा के आदमी बना के सही रास्ता पर ले आवे चाहत रहे आ रात दिन कहे भकोल धनिकन के लठैती ना करेके ऊ काम निकल गईला पर अंगुठा देखा देला। ऊ हमरा ऊपर अविश्वास ना कईले बाकिर हम ही विश्वासघात क दिहलीं। गरीबन के दुख दर्द समझे आ ओकरा खातिर लड़ेवाला आदमी के अनहक में जान ले लिहलीं।

जेल के चाहदीवारी में बन्द भइला के बाद हमरा आँख के पट्टी खूलल धरती के सरग बनावे वाला आदमी के हम धरती से उठा दिहलीं। ई काम त ओ आदमी के संगे करे के चाहीं जे रात दिन धन के बल पर कुकरम करता बाकिर ओकरा चादर पर कहीं दाग नइखे। कोट-कचहरी, हाकिम हुकूम सब ओकरा चाँनी के चरू ओर चकर कटता। ऊ इन्साफ बेचता आ खरीदता।

अग्रवाल! जवन भइल तवन निमने भईल। तू जवन कइले आ करवले तबनो ठीके बा। हमरा कुछ रोपेया चाहीं काल्ह फेरू आइब। बुझाव त दिह, ना त दूतकार दिह। हम लौट जाएब आ कबो दुआरी ना आएब।



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भकोल घरे गइले आ अपना अपमान के बदला लेबे खातिर तुल गइलें। मोटिया चादर ओढ़ले आ काँख तर एगो बम चोरा लिहले आ अग्रवाल के कोठा पर पहूं चले। दुआरी पर घेंकुरी मार के बइठ गइले। अग्रवाल पूजा-पाठ क के उठले त भकोल के देखते बिगड़ के खाड़ हो गइले। "हमरा इहाँ कारू के खाजाना राखल बा चोर-बनोर के देबे खातिर।" एतना बात सूनते भकोल कहले— "चोर-बनोर के बल पर तें लाख पति बन गइल। तें अपना राजनीतिक दुश्मन के हमरा हाथे खून करवले अब पइसा देबे में छाती फाटल बा। ले साला ले। हई भकोल के बम.। अग्रवाल चिल्लात भगले बाकिर भकोल एतना निशाना से बम फेंकले कि अग्रवाल के पीठ पर लाग गइल आ ऊ छीतरा गइले। भकोल खुशी में नाचे लगले हमरा आत्मा के शान्ति मिल गइल आ लोग कहे लागल साँप पोसला के नतीजा अइसने होला।

★

लघुकथा —

## ईमानदारी

—जय बहादुर सिंह

'बबुआ जी' बनवारी बाबू के एकलौता संतान रहले आ बनवारी बाबू के नजर में अतना काबिल लइका पूरा श्रीनाथपुर में केहु के ना रहले। बोर्ड के परीक्षा में ८७ सैकड़ा अंक से पास क के ऊ एगो रेकार्ड कायम क देले बाड़ें। आ खूबी ई कि अतना ढेरि खा अंक लावे खातिर जोगाड़ो ऊ खुदे कइले, पइसा भलहीं एकरा खातिर बनवारी बाबू देले होखसु। आजु ले बबुआजी कवनो क्लास में फेल ना भइलें। आखिर बनवारिये बाबू के बाबूजी के खोलल स्कूल ह आ ओकर सेक्रेटरियो बनवारिये बाबू बाड़ें। भला सेक्रेटरी के सपूत के फेल करेके मजाल केकर बा?

बनवारी बाबू जबे ना तबे पुत्र-प्रशंसा में मगन हो के कहे लागसु— "जानताड़ बाचा बहुते बढ़िया स्कूल में सेंटर परि गइल रहे। एगो रूम में खाली स्पेशले लइकन के इंतजाम रहे। केहू तीन स, केहू चारि स, सबसे अधिका हमहीं एक हजार प्रिंसिपल साहेब के देले रहलीं। आरे एगो लइका बाड़े, ई धन केकरा खातिर बा! बाकिर प्रिंसिपलो साहेब ईमानदार बाड़ें। बेचारू पइसा-पइसा असूल क देलें। सभे प्रश्नोत्तर ब्लैके बोर्ड पर लिखवा देसु।"

—"पइसा के ईमानदारीपूर्वक सरियत देबे वाला एह संसार में बहुत कमे लोग बा!"

★

—एल ४/५, रोड न० १७
टेल्को कॉलोनी, जमशेदपुर-४



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

# बाजल

— गंगा प्रसाद अरुण

सगरी जगती के पीर हर लीह
एगो अइसन मधुर लहर दीह ।

हम त चहलीं, हमार हिस्सा में
एक मुट्ठी अबीर धर दीह ।

जहाँ बेबस उसाँस के पहरा
नेह - नेवरल समीर भर दीह ।

केहू के लोर पोंछ लीं बढ़के
मन के अतना अधीर कर दीह ।

जेकर तूफान में खोंता उजरल
ओह पंछी के नया घर दीह ।

ठहर सके ना रात के कारिख
सोनहुला भोर कुछ सुघर दीह ।

सनेह शेष कुछ अगर दीह
नेक विश्वास के नजर दीह ।

जिन्दगी खिल उठे उमंग भरल
कुछ त अइसन सहज पहर दीह ।

अउरो कुछ साध ना रहल, हमरा
मन के फक्कड़ कबीर कर दीह ।



CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

# जन-जन तक यह संदेश पहुँचायें कि

★ परिवार में लड़की का जन्म
अवांछित नहीं है ।

★ परिवार के लिए उसका जन्म
विपत्तियों का कारण नहीं है ।

★ लड़कियाँ अभिभावकों पर
बोझ नहीं हैं ।

★ लड़कियाँ किसी मायने में
लड़कों से कम नहीं हैं ।

★ लड़कियाँ अभिशाप नहीं
मानव-जाति के लिए प्रभु का
अप्रतिम उपहार हैं ।

लड़का नहीं होने पर हीनता-बोध कैसा ?
लड़की को ही लड़के के समान
फलने - फूलने के अवसर प्रदान करें ।

## परिवार कल्याण संस्थान, जमशेदपुर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय.....

# हमारे कार्यक्रमों की विविधता समुदाय की आवश्यकताओं के अनुरूप है ।

* बच्चों के लिए शिक्षण एवं खेलकूद
* किशोरों के लिए शिक्षण, खेलकूद एवं चरित्र निर्माण
* युवाओं के लिए खेलकूद, चरित्र निर्माण एवं स्वनियोजन प्रशिक्षण
* असहाय महिलाओं के लिए सिलाई कशीदा-कारी एवं अन्य आर्थिक कार्यक्रम
* वयोवृद्ध गुरूजनों के लिए गुरुजन सभा कार्यक्रम

अर्थात हर उम्र, स्तर एवं वर्ग के उपयुक्त कार्यक्रम

सामुदायिक विकास एवं समाज कल्याण विभाग,
टेल्को, जमशेदपुर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi